Nutan Vidyalaya Sevabhavi Education Society, Umri
Late Babasaheb Deshmukh Gorthekar Art's,
Commerce & Science Mahavidyalaya,
Umri, Dist. Nanded (M.S.)

(Affiliated to Swami Ramanand Teerth Marathwada University, Nanded)
(Recognition U/S 12(B), 2 (F) of the UGC Act 1956)
Website : www.lbdgmu.in
Email: lbdgcollege@rediffmail.com

One day Interdisciplinary National Conference

On

"Rural Development : Issues & Challenges"

21st December 2019

Organized by

Internal Quality Assurance Cell
Late Babasaheb Deshmukh Gorthekar Art's,
Commerce & Science Mahavidyalaya, Umri

Collaboration with
Swami Ramanand Teerth Marathwada University,
Nanded (M.S)

Chief Editor
Dr. Tukaram Vaijanathrao Powale

Co – Editor
Dr. Z. R. Pathan, **Dr. D. D. Kolhekar,**
Dr. G. P. Yedle **Dr. V. V. Bhoyar**

"Rural Development : Issues & Challenges" Part - 1

AARHAT PUBLICATION & AARHAT JOURNAL'S
108, Gokuldham Park, Dr. Ambedkar Chowk, Near T.V. Tower, Badlapur (E)-421503
Email ID: aarhatpublication@gmail.com • Phone: 9822307164
Website: www.aarhat.com

Scanned with ACE Scanner

Published by : Aarhat Publication & Aarhat Journal's
Mobile No : 9922444833 / 8355852142
21st December 2019

ISSN : 2278- 5655

Volume – VIII, Special Issue – XXIII

© Nutan Vidyalaya Sevabhavi Education Society, Umri
Late Babasaheb Deshmukh Gorthekar Art's,
Commerce & Science Mahavidyalaya, Umri, Dist. Nanded (M.S.)

Chief Editor : Dr. Tukaram Powale

Co-Editor : Dr. Z. R. Pathan, Dr. D. D. Kolhekar,
Dr. G. P. Yedle, Dr. V. V. Bhoyar.

EDITORS :

Disclaimer :
The views expressed herein are those of the authors. The editors, publishers and printers do not guarantee the correctness of facts, and do not accept any liability with respect to the matter published in the book. However editors and publishers can be informed about any error or omission for the sake of improvement. All rights reserved.
No part of the publication be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted any form or by any means electronic, mechanical, photocopying, recording and or otherwise without the prior written permission of the publisher and authors.

Message

I congratulate the organizers of the one day National Conference on "Rural Development : Issues and Challenges" held on 21st December, 2019 organized by our institute in Late Babasaheb Deshmukh Gorthekar Arts, Commerce and Science Mahavidyalaya, Umri, Dist. Nanded. It is a very good academic activity and I am sure it will motivate the researchers to undertake further research.

The conference will give quality impression about the activities of our institute to the participants and will strengthen the confidence of our faculty.

The conference deal with the theme of Rural Development: Issues and Challenges, I appreciate the initiative taken by the college in arranging this conference to provide opportunity for Researcher, Teacher and Students to interact on a single platform. I hope there will be sincere and fruitful discussion on the Rural Development: Issues and Challenges.

With the Best Wishes... Thanks

Hon'ble Shri. Govindrao Mukkawar Shirurkar, President
Nutan Vidhyalaya Sevabhavi Education
Society, Umri, Dist. Nanded

Scanned with ACE Scanner

18	प्रा. डॉ. पांडुरंग पांचाळ	शाश्वत कृषी विकास एक चिंतन	91
19	Sanjay. M. Dalvi And V. N. Kadam And R. R. Rakh	Isolation And Screening Of Phosphate Solubilizing Bacteria (Psb) For Their Potential Use In Sustainable Agricultural	95
20	R. R. Rakh And L. S. Raut And S. M. Dalvi	For Sustainable Agriculture: Isolation And Screeningof *Bacillus Spp.*For Microbiological Controlof *Sclerotium Rolfsii* Sacc., A Stem Rot Pathogen Of Groundnut	107
21	प्रा. डॉ. प्रमोद सुर्यभान शंभरकर	सामाजिक आव्हाने आणि ग्रामीण विकास	118
22	प्रा. डॉ. बी. एम. कांबळे	ग्रामीण विकास आणि सामाजिक समस्या : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	125
23	Mr. Mihir Umesh Inamdar	A Critical Analysis Of Domestic Violence In India	130
24	डॉ. महेश प्रल्हादराव गोमासे	पर्यावरण व ग्रामीण विकास	135
25	Dr. C. P. Karkare	Financial Inclusion : Pradhanmantri Janddhan Yojana	140
26	Dr. S. P. Gaikwad	Scope Of Rural Development Through Agrobusiness In India	146
27	डॉ. योगिता मा. पवार (लहानकर)	कृषी आधारित उदयोग आणि ग्रामीण विकास	148
28	डॉ. प्रिया ए.	वैश्वीकरण का समय और अनुपस्थित गाँव	152
29	सुदेश रानी	ग्रामीण पर्यटन : ग्रामीण भारत के समग्र विकास की सम्भावनाएँ	156
30	Ingle S. L.	Impact Of Water Pollutions On Godavari River In Maharashtra State	160
31	मुजावर जैनु हमिद व डॉ अतुल कुमार पांडेय	हिंदी के आंचलिक उपन्यासों मेंअभिव्यक्त ग्रामीण जन–जीवन	162
32	श्री करडे महादेव बळीराम	सामाजिक समस्याएँ और ग्रामीण विकास	167
33	श्रीमती भाग्यश्री पांडुरंग पानढवळे	ग्रामीण पयर्टन आणि ग्रामीण विकास	174

34	डॉ. सुनील गुलाबसिंग जाधव	सूखता हुआ तालाब में : — जाति बहिष्कार एवं छूत–अछूत की समस्या ।	181
35	डॉ. मंगल नागोराव मारकड	भारत के ग्रामीण विकास में ग्रामीण वित्त का योगदान	187
36	डॉ. ए. एस. नलवडे	नवीन आर्थिक धोरण : भारताच्या ग्रामीण विकासाचा प्रश्न आणि उपाययोजना	194
37	डॉ. शिवाजी नागोराव भदरगे	ओमप्रकाश वाल्मीकि के कहानियों में श्रमिक ग्रामीण दलित महिलाओ का जीवन	199
38	प्रा. एस. व्ही. शिंदे	ग्रामीण समाज जीवन आणि संगीत	203
39	डॉ. बी. आर. भोसले	भारत की ग्रामीण संस्कृती और मुस्लीम सामाजिक आंदोलन	206
40	प्रा. डॉ. ज्ञानेश्वर गंगाधर गाडे	मैला आँचल – उपन्यास में कृषक जीवन	211

Scanned with ACE Scanner

ओमप्रकाश वाल्मीकि के कहानियों में श्रमिक ग्रामीण दलित महिलाओ का जीवन

डॉ. शिवाजी नागोराव भदरगे
सहायक प्राध्यापक एवं हिन्दी विभाग प्रमुख,
हु.जयवंतराव पाटील महाविद्यालय, हिमायतनगर, जी. नांदेड ४३१८०२.

सदियों से यहाँ दलित स्त्री अपने माथे पर दोहरा अभिशाप लेकर जी रही थी। दुनिया का आधा हिस्सा नारी समाज का है। परंतु वह प्राचीन काल से लेकर आज तक अधिक रूप में पुरूषी मानसिकता शिकार बनी हुई है। भारतीय समाज व्यवस्था में स्त्री और शुद्र को हरसमय हीन मानकर अपमानित किया गया और उसके सार्वजनिक स्थान को नकारा गया। वर्ण व्यवस्था ने उसे केवल भोग्य की वस्तु मानकर विडम्बना की। परंतु आज के स्त्री में थोडा बहुत बदल महात्मा फुले, सावित्रीबाई फुले, शाहु महाराज एवं डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर आदि के वैचारिक क्रांती से हुआ है।

भारतीय समाज व्यवस्था में दो प्रकार की शोषित नारी है, एक दलित और दूसरी सर्वण। इन दोनों को भी वर्ण–व्यवस्था में गौण स्थान दिया है। इन दो नारियों के शोषित रूप का चित्रण ओमप्रकाश वाल्मीकि के कहॉनियों मे मिलता है, परंतु यहॉ केवल दलित श्रमिक जो पुरूषी वासनांधता का शिकार काम की जगह होती है,उसका चित्रण किया गया है। वर्ण–व्यवस्था के कारण दलित स्त्री दलितों में भी दलित होने के कारण और पुरूषी मानसिकता इन के दो प्रकार प्रहार को झेलती है। इसी कारण उसकी स्थिती अत्यंत दीन –हीन हुई थी। दलित श्रमिक स्त्री की आर्थिक दुर्दशा, सामाजिक अपमान, गरिबी, अशिक्षा, कठीण श्रम के बावजूद पर बेगारी, सवर्ण पुरूषो की वासनांधता का शिकार आदि कठिनायों से झगडते–झगडते दलित श्रमिक स्त्री अपनी इज्जत को ज्यान से प्यारी मानकरी बचाती है, और ओ अपनी उपजिविका का साधन काम को झोड देती है, पर आस्मीता को गीरवी नही रख सकती है। ऐसी कामकाजी स्वाभीमानी दलित स्त्री को खेत – खलियानों, ईट भट्टे, घर के अंदर आदि काम की जगह सवर्णो की वासनांधता का शिकार होना पडता है। ऐसी अनेक कामकाजी दलित महिलाओं को शोषण का चित्रण ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अम्मा, यह अन्त नहीं, खानाबदोश तथा जंगल की रानी आदि कहानियों में मुख्यत: किया है। अत: लेखक के लिखने को उद्देश्य डॉ.बाबासाहेब के संवैधानिक अधिकारों से आज की दलित महिलाओं को परिचित कराना है।

१) किसनी तथा मानों:

कहानीपर ओमप्रकाश वाल्मीकिजी ने "खानाबदोश" कहानी में ईट भट्टी में काम

Scanned with ACE Scanner

करनेवाली दलित श्रमजिवी महिलाओं को सवर्णों द्वारा किये जाने वाले शारीरिक, मानसिक छल कपट का चित्रण किया गया है। आज अधिकांश दलित समाज की महिलाएँ ईट भट्टी या खेतीपर मजदूरी करनेवाली रही है। उन्हे रोज भुखमारी का सामना करना पडता है, इसलिए रोजगारी करनी पडती है। नीची जाति से सम्बधित होने क कारण दलित आर्थिक रूप से अमीर लोंगो पर आश्रित होते है। इसलिए सवर्णो के घरों में और खेतों में मजदूरी करने के लिए जाना पड़ता है। इसी मजदूरी के कारण उन्हें बलात्कार का सामना करना पड़ता है। प्रस्तुत कहानी की सुखिया और मानों दोनो पति–पत्नी ईट भट्टे पर काम करते हैं।

किसनी: खानाबदोश कहानी में मानों और सुखिया स्वयं का ईट का पक्का मकान हों यह सपना देखती है। यह दोनों जिस ईट भट्टे पर काम करते थे इसी पर किसनी और महेश पति–पत्नी दोनो काम करते है। जिनके शादी को छः महिने ही हो चुके थे। किसनी को सुबेसिंह ने अपनी हवसका शिकार बनाकर उसे गुलाम बनाया था। इस बात की खबर सभी मजदुरों को हो जाती है। उसका पति महेश उसे समझाता है पर इसके कहने का किसनी पर कोई असर नही होता है।

मानो: इसी कहानी में दुसरी नारी पात्र मानों है। यह भी ईट भट्टे पर काम करनेवाली श्रमिक दलित महिला है। इसे भी सवर्णों के गंधी मानसिकताका शिकार होना पडता है। प्रस्तुत कहानी में किसनी को बाद सुबेसिंह ने अपनी नजर मानों पर डालना आरंभ किया था। वह मानों को भी अपनी हावस का शिकार बनाना चाहता है। इस मनिषा से सुबेसिंह क दिन मानों को अपने पास बुलाता है पर मानो के बदले वहाँ जसदेव आता जाता है। उसे देखकर सुबेसिंह भड़कता है और कहता है कि तुझे किसने बुलाया है, जी जो काम हो बताइए मैं इस कर दुगाँ जसदेव ने बडी विनम्रता से कहाँ। "तू उसका खसम है..... वह उसकी.....पर चर्बी चढ़ गई है। सुबेसिंह ने अपशब्द का इस्तेमाल किया।" तब सुबेसिंह ने जसदेव की बहूत पिटाई की। इस तरह मानों को प्राप्त करने के लिए सुबेसिंह अनेक हथकंडे को अपनाता है। परंतु मानो मात्र उसके सिकंजे में नही आती। बड़ी होशारी से उसने सुबेसिंह के पास अपने पति को भेजकर अपने उपर के संकट को हल करती है। इसके बाद भी सुबेसिंह मानो को प्राप्त करने के लिए अनेक हथकंडो को अपनाता है। फिर भी मानो उसके सिकंजे में नही आती है। अंत में मानो अपना ईट भट्टे

का काम छोडकर चले जाते है और उनका घर बांधने का सपना भी अधूरा रह जाता है।

२) बिरमा: सदियों से श्रमजिवी दलितए महिलाएँ अपने रोज–मर्रा के जीवन में अनेक समस्याओं की शिकार हुई है। लडकी का जन्म होने से घर में, अस्पृह जाति में पैदा से गल्लीमोहल्ले में, आदि अनेक जगह अपमान सहना पडता है। इतना ही नहीं है कि सवर्णों के घर और खेतों में काम करनेवाली दलित महिलाओं के साथ छेडखानी और इज्जत लुटने जैसी

घटनाओं का हमेशा से शिकार होना पडा है। कथाकार ओम प्रकाश वाल्मीकि ने उक्त बातों को अपनी "यह अन्त नहीं" में चित्रित किया है।

यह अन्त नही कहानी की बिरमा मुख्य नायिका दलित महिला है। कहानी में बिरमा मंगलू की लडकी है और उसकी माँ गाँव के जमिनदारों के खेतों में धान कटाई काम करते है। एक दिन बिरमा खेत में काम करके जल्दी ही घर निकलती है। बिरमा को अकेले देखकर तेजभान का लड़का सचिन्दर बिरमा का हाथ पकडकर उसकी छेडखानी करने लगता है। बिरमा ने धान की गढ्ढी सचिन्दर के अंग पर फेंकर और उसके जांघो पर जोर से पैर का घुस्सा लगाकर वहाँ से भागकर अपना बचाव कर लेती है और घर में आकर अपने भाई किसन को सब बताती है। इस बात को सोचकर गाव पंचायत ने सचिन्दर के खिलाप अर्जी दी है। इस बात को सुनकर सचिन्दर को पिता भड़क उठते है और कहते है "अब! कुछ करना ही था तो हरामजादी को खेती में ही घसीट लेता..... खुद ही किसी को मुँह दिखाले जोग ना रहती।"[२] इस प्रकार पंचायत का सरपंच गाँव के जमीनदार का आदमी होता है। सचिन्दर को बिना कुछ कहे केवल पाँच रूपयों की सजा दी जाती है। इस बात की दखल पुलीस भी नहीं लेती है और गाँव के लोग भी उसके खिलाप कुछ नही करते है।

इस तरह सें दलितों की बहू–बेटियों को इज्जत लुटने पर दलित कुछ भी नहीं करते थे, लेकिन आज मात्र शिक्षा के कारण दलितों में चेतना जागृत हुई है। परंतु डॉ.बाबासाहेब के कारण आज का दलित अपनें उपर होने वाले अन्याय के खिलाफ आवाज उठा सकता है। इस तरह कहानी के अन्त में बिरमा अपनी आत्मरक्षा की भावना व्यक्त करती हुई कहती है "इस हार पर मुँह क्यों लटका रे हो। यह अन्त ना है..... तुम लोगों ने मेरे विश्वास को जगाया है..

.....इसे मरने मत देना।"[३] इस तरह से हमारी बहु बेटियों को हमेशा से ही सवर्णो की हवस का शिकार होना पडता था। कहानी में कहानीकार ने बिरमा को माध्यम से अभिव्यक्त किया हैं।

३) अम्मा : ओमप्रकाश वाल्मीकि ने 'अम्मा' कहानी में दलित महिला को वासनांधिता का शिकार होने का चित्रण 'अम्मा' नायिक के माध्यम से किया है। दलित महिलाओं की दयनीता का कारण हिन्दू द्वारा थोपी गई वर्ण–व्यवस्था ही मुख्य है। स्त्री को दलित में दलित माना गया है। इसलिए ओमप्रकाश वाल्मीकि के अम्मा कहानी में, अम्मा सवर्णो के घरों मे टट्टी साफ करनें वाली दलित महिला के शोषण का चित्रण है। इसके साथ ही दलित महिलाएँ सवर्णो के घर में, खेतों में, रोजी रोटी के लिए काम करती हुई दिखाई देती है, तो उन्हें हर समय सवर्णो के वासनांधता का शिकार हाना पडता है। इसका चित्रण वाल्मीकिजी को अनेक कहानियाँ में मिलता है।

'अम्मा' कहानी को नायिका अम्मा उसके पुरखों से परम्परागत रूप से वर्ण व्यवस्था ने

Scanned with ACE Scanner

किया हुआ व्यवसाय सवर्णो के घरो टट्टी साफ करने काम करती है। और इससे अपने परिवार को चलाती है और यही व्यवसाय उसके पुरखे भी करते थे। अम्मा अनेक वर्षो से यह काम मिसेज चोपडा के घर में किया करती थी और दूसरों के घरों से ज्यादा अमदानी उसे मिलती थी। मिसेज चोपडा के घर में विनोद नामका व्यक्ती हमेशा आता–जाता रहता था। मिसेज चोपडा और विनोद के नाजायज सम्बध थे। अम्मा अपने काम न करने का कारण कहानी का दूसरी स्त्री पात्र हरदोई से सुनाती हैऔर इस घर का काम हरदोई को बीस रूपये में बेच देती है। इस बात को सुनने के बाद हरदोई कहती है। लेखक ने लिखा है कि "तू तो मुर्ख है नासपिट्टो अपनी माँ के यार की टट्टी में घसीट लेती। पहले उतरवाती उसके कपडे कि आ तुझो करवा दूँ मसूरी की सैर। फिर करवाती उससे भिगनह का नाच। झाडू से पीट–पीट कर साले कुत्ते कू सड़क पे लिटाती।"[१] इस तरह से कहानी श्रमजिवी दलित महिला गरीबी से बडी इज्जत मानकर खुद काम को ही छोड देती है और अपने स्वाभिमान का परिचय देती है। यह कहानी की मार्मिकता है।

अंतत: डॉ.बाबासाहेब ने एक स्थान पर कहाँ था कि स्त्री दलितों में भी दलित हे इसके बावजूद दलित महिलाएँ और सवर्ण महिलाओं की स्थिती एक जैसी नही है। दलित महिलाओं को अपने पुरूष के अलावा छआछूत की समस्या से भी जुझना पडता है। बडे घर की महिलाओं को उत्पीडन चार दिवारों के अन्दर होता है, परंतू दलित महिलाओं का शोषण घर के अन्दर बाहर हर जगह होता है। घर में घर के लोंगो से तथा बाहर समाज में सवर्णो से। क्योंकि दलितों को सवर्णो के खेत–खलिहान पर निर्भर रहना पडता है। इसलिए इस स्थानों पर उनका आम शोषण होता है। ईट भट्टे पर काम करनेवाली दलित महिलाओं के साथ अक्सर ऐसा होता ही है। ये सब उच्चवर्णिय महिलाओं के साथ नही होती है। परंतू इस दोनो के इस व्यवहार में जमीन–आसमांन का फर्क होता है। सवर्ण महिलाएँ मात्र अपनी ऐयाशी के लिए अन्य पुरूषों के साथ नाजायज संबंध रखती है और दलित श्रमजिवी महिलाओं को सवर्णो के हवस का शिकार जबरण होना पडता है। ऐसे दलित श्रमिक नारी उत्पीड़न की कहीं समस्यांओ को वाल्मीकि ने अनेक कहानियाँ में चित्रित किया है।

संदर्भ सुचि:

१) ओमप्रकाश वाल्मीकि "सलाम"
२) ओमप्रकाश वाल्मीकि "घुसपैठिए"
३) वही
४) ओमप्रकाश वाल्मीकि "सलाम"
५) रमनिका गुप्ता "दलित चेतना सोच"

Scanned with ACE Scanner